दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार 2025 के पुरस्कार विजेताओं की सूची

I. व्यक्तिगत उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार –2025.

S.No.	सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन		
1		**सुश्री अबोली विजय जरित**	80शारीरिक दिव्यांगता के बावजूद नागपुर %, महाराष्ट्र की **सुश्री अबोली विजय जरित** साहस और आत्मविश्वास की प्रेरक मिसाल हैं। उन्होंने **नागपुर की पहली व्हीलचेयर मॉडल, प्रेरक वक्ता** तथा **हैप्पीनेस एम्बेसडर** के रूप में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। सुश्री अबोली ने *ट्रूली बॉर्न डिफरेंट लंदन), 2022)* और *कुर्दिस्तान नेशनल टीवी* जैसे अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्रों में भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा *इंडियन आइडल* और *सा रे गा मा पा लिटिल चैंप्स* जैसे लोकप्रिय मंचों पर अपनी प्रतिभा दिखाई। वे **मिस व्हीलचेयर इंडिया)2021) की फाइनलिस्ट** तथा **इंडिया की दिव्यांग ग्लैमर 2023** की विजेता रही हैं और **इन्फ्लुएंसर बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स)2025)** में स्थान प्राप्त किया है। उनकी असाधारण उपलब्धियों और प्रेरक व्यक्तित्व की मान्यता में उन्हें **वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
2		**सुश्री मेघा पतंगी**	बेंगलुरु, कर्नाटक की **सुश्री मेघा पतंगी** दृढ़ संकल्प, नवाचार और नेतृत्व की प्रेरक मिसाल हैं। **पूर्ण दृष्टिहीनता** के बावजूद उन्होंने चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए कार्यस्थलों और समुदायों में पहुँच और समावेशन की नई संस्कृति स्थापित की है। **कंपनी सेक्रेटरी** तथा **पेगासिस्टम्स की वरिष्ठ एक्सेसिबिलिटी विशेषज्ञ** के रूप में उन्होंने विश्व-स्तर पर उपयोग होने वाले छह प्रमुख सॉफ़्टवेयर उत्पादों में डिजिटल एक्सेसिबिलिटी को नई दिशा दी है। उनके नेतृत्व में कंपनी ने तकनीकी विकास में सहानुभूति और उपयोगकर्ता-केंद्रितता को केंद्र में रखा है, जिसके लिए उन्हें अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। कॉर्पोरेट कार्य से परे, उन्होंने **200 से अधिक दृष्टिबाधित युवाओं को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देकर** उन्हें प्रतिष्ठित कंपनियों में रोजगार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका कार्य तकनीक, संवेदनशीलता और सशक्तिकरण का संगम है। उनकी असाधारण उपलब्धियों और डिजिटल समावेशन में योगदान के लिए **सुश्री मेघा पतंगी को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' से सम्मानित किया गया।**

3		**श्रीमती भाग्यश्री मनोहर नादीमेतला**	महाराष्ट्र के पुणे की **श्रीमती भाग्यश्री मनोहर नादीमेतला** सृजनशीलता, दृढ़ निश्चय और सशक्तिकरण की प्रतीक हैं। जन्म से श्रवणबाधित होने के बावजूद उन्होंने अपनी चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए कला और व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से दूसरों को आत्मनिर्भर बनाने का आजीवन संकल्प लिया है। **सुहृद मंडल, पुणे** में **कला एवं व्यावसायिक कौशल शिक्षिका** के रूप में उन्होंने **500 से अधिक दिव्यांग विद्यार्थियों को प्रशिक्षित** कर उनके आत्मविश्वास और जीविकोपार्जन की राह को सशक्त बनाया है। **फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर** और **अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित कलाकार** के रूप में वे **भारत की पहली श्रवण बाधित महिला हैं जिन्होंने वर्ष 2023 में अंतरराष्ट्रीय एबिलिंपिक्स (फ्रांस)** में देश का प्रतिनिधित्व किया। उनके निर्देशन में अनेक विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त किए हैं। अपनी समावेशी शिक्षा शैली से वे सिद्ध करती हैं कि कला केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का मार्ग भी है। उनकी असाधारण उपलब्धियों और दिव्यांगजन सशक्तिकरण में योगदान के सम्मान में **श्रीमती भाग्यश्री मनोहर नादीमेतला को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
4		**श्री बसंत विकास साहू**	छत्तीसगढ़ के धमतरी निवासी **श्री बसंत विकास साहू** साहस, सृजनशीलता और दृढ़ निश्चय के प्रतीक हैं। **95% शारीरिक दिव्यांगता** के बावजूद उन्होंने कला और समाज सेवा को अपना जीवन समर्पित कर दिया है। पिछले **27 वर्षों** से वे अपनी भुजा में ब्रश बाँधकर ऐसी चित्रकृतियाँ बना रहे हैं जो भारतीय जनजातीय संस्कृति की आत्मा को सजीव कर देती हैं। उन्होंने **'जीवन रंग फाउंडेशन'** के माध्यम से दिव्यांग और जनजातीय युवाओं को प्रशिक्षित कर आत्मनिर्भरता, गरिमा और सृजन की शक्ति प्रदान की है। उनके चित्र राष्ट्रपति भवन सहित देश-विदेश के अनेक कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित हो चुके हैं। श्री साहू ने कला को समाज परिवर्तन और प्रेरणा का माध्यम बना दिया है। उनकी असाधारण कलात्मक उपलब्धियों और सामाजिक योगदान के सम्मान में उन्हें **वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

5		**लेफ्टिनेंट कर्नल द्वारकेश चंद्रशेखरन**	भारतीय सेना के **लेफ्टिनेंट कर्नल सी. द्वारकेश** साहस, दृढ़ संकल्प और सेवा भावना के अद्भुत उदाहरण हैं। एक कार्यस्थल दुर्घटना में दृष्टिहीन होने के बाद भी वे **भारतीय सशस्त्र बलों के पहले ऐसे अधिकारी बने जिन्हें पूर्ण दृष्टिहीनता के बावजूद सक्रिय सेवा में बनाए रखा गया।** उन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सहायक तकनीक के माध्यम से अपने कार्यों को उसी दक्षता से किया जैसा सक्षम अधिकारी करते हैं। उन्होंने **राष्ट्रीय पैरालंपिक प्रतियोगिताओं** में तैराकी और शूटिंग में कई स्वर्ण पदक जीते हैं तथा **विश्व शूटिंग में तीसरे स्थान** पर रहे हैं। उन्होंने **16,000 फीट ऊँचे सियाचिन ग्लेशियर** को फतह कर विश्व रिकॉर्ड बनाया, जिसकी सराहना माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई। उनकी उपलब्धियाँ सेना, खेल और शिक्षा – तीनों क्षेत्रों में प्रेरणा का प्रतीक हैं। उनके असाधारण योगदान और अटूट जज़्बे के सम्मान में **लेफ्टिनेंट कर्नल द्वारकेश को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
6		**श्री राजेश शरद केतकर**	वडोदरा, गुजरात के **श्री राजेश शरद केतकर** एक दूरदर्शी श्रवण बाधित नेता, शिक्षक और समाजसेवी हैं जिन्होंने भारत में श्रवण बाधित जनसमुदाय के सशक्तिकरण का स्वरूप बदल दिया है। जन्म से श्रवण बाधित होने के बावजूद उन्होंने अपनी चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए शिक्षा, पहुँच और नेतृत्व को बढ़ावा देने का आजीवन संकल्प लिया। **मूक बधिर मंडल (एम.बी.एम.)** के परियोजना निदेशक के रूप में उन्होंने **भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल.) के माध्यम से अंग्रेज़ी और डिजिटल साक्षरता** का अभिनव मॉडल विकसित किया है, जिससे हज़ारों श्रवण बाधित व्यक्तियों को आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास प्राप्त हुआ है। वे **भारत का सबसे बड़ा** श्रवण बाधित **-प्रेरित समाचार और शिक्षा मंच** संचालित करते हैं, जो **1.8 करोड़ से अधिक दर्शकों** तक पहुँच चुका है और श्रवण बाधित पहचान को सम्मान और गर्व प्रदान कर रहा है। शिक्षा, डिजिटल मीडिया और जागरूकता के माध्यम से उन्होंने नई पीढ़ी के श्रवण बाधित युवाओं को प्रेरित किया है। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों और समर्पण के सम्मान में **श्री राजेश शरद केतकर को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

श्रेष्ठ दिव्यांगजन

1		**सुश्री पूजा गर्ग**	मध्यप्रदेश के इंदौर की **सुश्री पूजा गर्ग** एक प्रेरक पैरा-एथलीट, कैंसर सर्वाइवर और विश्व कीर्तिमान स्थापित करने वाली साहसी एडवेंचर बाइकर हैं। रीढ़ की हड्डी की गंभीर चोट के बाद उन्होंने खेलों और साहस के माध्यम से जीवन को पुनः परिभाषित किया। उन्होंने जापान, उज्बेकिस्तान और थाईलैंड में अंतरराष्ट्रीय **पैरा कैनोइंग प्रतियोगिताओं** में भारत का प्रतिनिधित्व किया और **एशियन पैरा कैनो चैंपियनशिप 2024** में **दो कांस्य पदक** जीते। उन्होंने **नाथुला पास (14,400 फीट)** पर 4,500 कि. मी. की एकल यात्रा के बाद तिरंगा फहराकर **विश्व की पहली पैराप्लेजिक महिला** के रूप में इतिहास रचा, जिसे **लंदन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स** और **भारतीय सेना** ने सम्मानित किया। उन्होंने **ट्रिपल सी – कैंसर काउंसलिंग सेंटर** की स्थापना कर कैंसर मरीजों और दिव्यांग युवाओं को प्रेरित किया है। खेल, साहसिक कार्य और सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **सुश्री पूजा गर्ग को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
2		**श्री निपुण कुमार मल्होत्रा**	दिल्ली के **श्री निपुण कुमार मल्होत्रा** प्रमुख सामाजिक उद्यमी एवं नीति निर्माता हैं, जिन्होंने दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। **आर्थ्रोग्रायपोसिस** नामक दुर्लभ जन्मजात रोग से पीड़ित होने के बावजूद उन्होंने **निपमैन फाउंडेशन** की स्थापना कर स्वास्थ्य, सुगम्यता और अधिकार के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया है। उन्होंने **"व्हील्स फॉर लाइफ"** नामक राष्ट्रीय प्लेटफ़ॉर्म की शुरुआत की, जिसके माध्यम से अब तक 25 राज्यों में 1900 से अधिक व्हीलचेयर वितरित की गई हैं। उनका **"3 ए फ्रेमवर्क – एटीट्यूड, एक्सेसिबिलिटी एवं अफोर्डेबिलिटी"** देश में दिव्यांगता नीति का आधार बना है। उन्होंने दिल्ली हाई कोर्ट में याचिकाओं द्वारा सुगम परिवहन की व्यवस्थाएँ सुनिश्चित कराईं। वे **राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के दिव्यांगता कोर समूह** के सदस्य तथा **फिक्की दिव्यांगजन सशक्तिकरण कार्य समूह** के संस्थापक अध्यक्ष हैं। सुगम्यता एवं सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **श्री निपुण कुमार मल्होत्रा को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

3		**सुश्री रक्षिता राजू**	कर्नाटक की **सुश्री रक्षिता राजू** साहस, दृढ़ता और उत्कृष्टता की प्रेरक मिसाल हैं। जन्म से दृष्टिबाधित होते हुए भी उन्होंने अपनी असमर्थता को अपनी सबसे बड़ी शक्ति में बदल दिया और **पैरा एथलेटिक्स -टी)11 श्रेणी(** में अद्भुत उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उन्होंने **एशियन पैरा गेम्स (जकार्ता 2018 और हांगझोउ 2023)** में स्वर्ण पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया है तथा **पेरिस 2024 पैरालंपिक खेलों** में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। वे **विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप** सहित अनेक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर चुकी हैं। कर्नाटक के एक छोटे से गाँव से विश्व मंच तक की उनकी यात्रा परिश्रम, विश्वास और अटूट इच्छाशक्ति की मिसाल है। खेलों में उनकी असाधारण उपलब्धियों और पैरा एथलीटों को प्रेरित करने में उनके योगदान के सम्मान में **सुश्री रक्षिता राजू को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
4	 YUDHAJEET DE	**<u>श्री युद्धजीत डे</u>**	पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के **श्री युद्धजीत डे** नवाचार, दृढ़ संकल्प और समावेशी उत्कृष्टता के प्रेरक उदाहरण हैं। जन्म से **पूर्ण दृष्टिबाधित** होते हुए भी उन्होंने अपनी असमर्थता को अपनी सबसे बड़ी शक्ति में बदलते हुए **अंतरराष्ट्रीय रेटेड शतरंज खिलाड़ी (FIDE रेटिंग 1810),** एक अग्रणी शतरंज कोच और **भारतीय शास्त्रीय संगीत में पाँच बार स्वर्ण पदक विजेता** के रूप में असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। वे भारत के **एकमात्र पूर्ण दृष्टिबाधित शतरंज कोच** हैं जो दृष्टिसंपन्न खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करते हैं, जिनमें से कई ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीते हैं। वर्ष 2024 में उन्होंने एक अनोखा इतिहास रचा जब उन्होंने स्वयं ही **दृष्टिसंपन्न खिलाड़ियों के लिए शतरंज टूर्नामेंट** का आयोजन किया जिसमें 70 प्रतिभागी, जिनमें 15 रेटेड खिलाड़ी भी शामिल थे, ने भाग लिया — यह समावेशन का एक अभूतपूर्व उदाहरण है। श्री युद्धजीत डे ने अपनी कला, नेतृत्व और संवेदनशीलता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि दिव्यांगता असमर्थता नहीं, बल्कि उत्कृष्टता की एक नई परिभाषा है। खेल, शिक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के सम्मान में **श्री युद्धजीत डे को वर्ष 2025 का "राष्ट्रीय पुरस्कार – श्रेष्ठ दिव्यांगजन श्रेणी" में सम्मानित किया गया।**

5		**<u>श्रीमती दीपाली शर्मा</u>**	जयपुर, राजस्थान की **श्रीमती दीपाली शर्मा** एक प्रतिभाशाली श्रवणबाधित चित्रकार हैं जिन्होंने अपनी सृजनशीलता और परिश्रम से अपनी दिव्यांगता को शक्ति में बदल दिया है। **फाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर (रजत पदक)** तथा **पीएच.डी. शोधार्थी** के रूप में उन्होंने **न्यूयॉर्क, सिंगापुर, दुबई** और **ग्रीस** जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन किया है। उनकी श्रृंखलाएँ **"कैप्टिविटी"** और **"क्लाउन"** यथार्थ और कल्पना का सुंदर संगम हैं, जो मानव जीवन की भावनाओं और संघर्षों को उकेरती हैं। उन्हें **राजस्थान ललित कला अकादमी राज्य कला पुरस्कार (2024)** तथा **टाटा फाउंडेशन का सबल पुरस्कार (2023)** प्राप्त हुआ है। वे कार्यशालाओं के माध्यम से श्रवणबाधित युवाओं को कला द्वारा आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित कर रही हैं। कला और सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के सम्मान में **श्रीमती दीपाली शर्मा को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
6		**श्री फर्डिनैंड लिंगडोह मार्शिलॉन्ग**	मेघालय के **श्री फर्डिनैंड लिंगडोह मार्शिलॉन्ग** एक प्रतिष्ठित दिव्यांग अधिकार कार्यकर्ता, शिक्षक और सामाजिक उद्यमी हैं जिन्होंने अपनी पूर्ण श्रवणबाधिता के बावजूद दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए जीवन समर्पित किया है। पिछले 18 वर्षों से वे उत्तर-पूर्व भारत में समावेशन, सुगम्यता और गरिमा को बढ़ावा देने में सक्रिय हैं। **मेघालय दिव्यांगजन महासंघ** के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने सार्वजनिक परिवहन, शिक्षा और रोजगार में समावेशिता को बढ़ावा दिया है। उन्होंने **मेघालय साइन बैंक ऐप** विकसित किया, **चुनाव अधिकारियों को सांकेतिक भाषा का प्रशिक्षण** दिया और **ईकनभा कंपनी** की स्थापना कर दिव्यांगजनों को रोजगार के अवसर प्रदान किए। वे **डी-30 डिसएबिलिटी इम्पैक्ट लिस्ट** के वैश्विक पुरस्कार विजेता हैं और समानता के सशक्त प्रतीक बन चुके हैं। दिव्यांगजनों के अधिकारों और समावेशन के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **श्री फर्डिनैंड लिंगडोह मार्शिलॉन्ग को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

7		**सुश्री गायत्री गुप्ता**	कर्नाटक के बेंगलुरु की **कुमारी गायत्री गुप्ता** एक उत्कृष्ट फ़ोटोग्राफ़र, ऐक्रेलिक आर्टिस्ट और आत्म-अधिवक्ता हैं, जो डाउन सिंड्रोम के साथ रहते हुए भी अपनी कला से समावेशन की मिसाल बनी हैं। उनकी तस्वीरें **राष्ट्रीय संग्रहालय, सालारजंग संग्रहालय** और **बेंगलुरु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे** जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर प्रदर्शित हो चुकी हैं, जहाँ उनकी दो तस्वीरें स्थायी रूप से लगी हैं। उन्हें **ग्लोबल एबिलिटी फ़ोटोग्राफ़ी चैलेंज (2023), ह्युंडई आर्ट फ़ॉर होप ग्रांट (2024)** और **क्रिस्टीज़, लंदन** से विशेष सम्मान प्राप्त हुआ है। अपनी **"माइंडलेस आर्ट"** कार्यशालाओं और डिजिटल मंचों के माध्यम से वे न्यूरोडाइवर्सिटी के प्रति जागरूकता फैलाती हैं और हज़ारों लोगों को प्रेरित करती हैं। कला के क्षेत्र में उनकी असाधारण उपलब्धियों और समावेशन को नई परिभाषा देने में योगदान के लिए **कुमारी गायत्री गुप्ता को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
8		**श्रेयस किरण एन. एस.**	केरल के त्रिशूर के **श्रेयस किरण एन. एस.** एक बहु-प्रतिभाशाली युवा कलाकार हैं, जिन्होंने **कर्नाटिक संगीत और मूर्तिकला चित्रकला** के क्षेत्र में अद्भुत सफलता प्राप्त की है। ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम पर रहते हुए भी उन्होंने **कर्नाटिक संगीत में स्नातक** की उपाधि प्राप्त की और **100 से अधिक मंच प्रस्तुतियाँ** दीं। उन्होंने **लगातार 1 घंटा 47 मिनट में 24 कर्नाटिक कृतियाँ गाकर** विश्व रिकॉर्ड बनाया है, जिसे **इंटरनेशनल और वर्ल्डवाइड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स** द्वारा मान्यता दी गई। उनकी कलाकृतियाँ **बेंगलुरु और हैदराबाद** की राज्य कला दीर्घाओं में प्रदर्शित हो चुकी हैं, और उनका ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म *स्पेक्ट्रम स्पॉट्स* कला बिक्री का माध्यम बना है। वे **फूड प्रोडक्शन में डिप्लोमा** धारक भी हैं और अपनी रचनात्मकता से अनेक दिव्यांग युवाओं को प्रेरित कर रहे हैं। कला और संस्कृति के क्षेत्र में उनकी असाधारण उपलब्धियों के सम्मान में **श्रेयस किरण एन. एस. को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

9		**कुमारी शीबा कोइलपिचाई**	कर्नाटक के बेंगलुरु की **कुमारी शीबा कोइलपिचाई** एक प्रतिभाशाली कलाकार और शिक्षिका हैं जिन्होंने अपनी बहु-दिव्यांगता को सृजनशीलता और प्रेरणा में परिवर्तित किया है। **वारली कला** की विशेषज्ञ शीबा ने अब तक **3,000 से अधिक चित्र** बनाए हैं, जो उनकी सूक्ष्मता और जीवंत अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध हैं। **स्पास्टिक्स सोसाइटी ऑफ कर्नाटक** में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे वहीं **कला शिक्षिका** के रूप में कार्यरत हैं और अपनी कला से अनेक विद्यार्थियों को प्रेरित करती हैं। उनके चित्र **राष्ट्रपति भवन, राज भवन (कर्नाटक)** तथा देश-विदेश की कई प्रतिष्ठित दीर्घाओं में प्रदर्शित हैं। उन्हें **राज्यपाल पुरस्कार, इंडिया फाउंडेशन फॉर आर्ट्स अवार्ड और एबिलिम्पिक्स इंडिया पुरस्कार** जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनकी कला ने दीवारों को सजाया है और उनकी मुस्कान ने दिलों को छुआ है। कला के क्षेत्र में उनकी असाधारण उपलब्धियों के सम्मान में **कुमारी शीबा कोइलपिचाई को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
10		**श्री मिरांडा डॉनबॉस्को टॉमर्किंसन**	तमिलनाडु के **श्री मिरांडा डॉनबॉस्को टॉमर्किंसन** एक अद्वितीय दृष्टिबाधित एवं श्रवणबाधित (DeafBlind) शिक्षक, शोधकर्ता और दिव्यांग अधिकारों के समर्थक हैं, जिन्होंने अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों को समाज परिवर्तन के अभियान में बदला है। वे **राष्ट्रीय बहुदिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान (एन.आई.ई.पी.एम.डी.), चेन्नई** में व्याख्याता के रूप में कार्यरत हैं और **टैक्टाइल ब्रेल तकनीक** व सहायक उपकरणों की मदद से भावी विशेष शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं। उन्होंने इतिहास रचा जब वे **भारत के पहले DeafBlind व्यक्ति बने जिन्होंने यूजीसी-नेट परीक्षा उत्तीर्ण की**, जिससे **मद्रास उच्च न्यायालय** के ऐतिहासिक निर्णय के बाद दृष्टिबाधित उम्मीदवारों के लिए ब्रेल प्रश्नपत्र की सुविधा लागू हुई। शिक्षण, लेखन और जन-जागरूकता के माध्यम से वे दिव्यांगता के प्रति दृष्टिकोण को बदल रहे हैं। समावेशी शिक्षा और अधिकारों के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **श्री मिरांडा डॉनबॉस्को टॉमर्किंसन को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांगजन' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

श्रेष्ठ दिव्यांग - बालबालिका/

1		**मास्टर मुहम्मद यसीन**	केरल के अलपुझा के **मास्टर मुहम्मद यसीन** एक विलक्षण बाल प्रतिभा हैं जिन्होंने अपनी शारीरिक चुनौतियों को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बना लिया है। **80% शारीरिक दिव्यांगता** के बावजूद वे **कीबोर्ड वादन, अभिनय, गायन और चित्रकला** में अद्भुत दक्षता रखते हैं। केवल 13 वर्ष की आयु में उन्होंने कई सम्मान प्राप्त किए हैं, जिनमें **ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बाल प्रतिभा पुरस्कार, उज्वला बाल्यं पुरस्कार (केरल सरकार) और साम्म 2025 लोक कला अकादमी पुरस्कार** शामिल हैं। उन्हें **ब्लाइंडफोल्ड कीबोर्ड वादन** के लिए **इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स** में स्थान मिला है तथा वे **एशियानेट शाइनिंग स्टार (सीज़न 2)** विजेता हैं। **पद्मश्री ममूटी** जैसे महान कलाकारों ने भी उनकी प्रतिभा की सराहना की है। कला, साहस और प्रेरणा के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **मास्टर मुहम्मद यसीन को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांग बाल' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
2		**कुमारी धृति प्रणय रांका**	महाराष्ट्र के पुणे की **कुमारी धृति प्रणय रांका**, 13 वर्षीया बाल कलाकार, रचनात्मकता, साहस और समावेशन की जीवंत मिसाल हैं। **डाउन सिंड्रोम** और **हृदय संबंधी स्थिति** के बावजूद उन्होंने रंगों, संवेदनाओं और आत्मविश्वास से अपना संसार सजाया है। **'टिक्ल योर आर्ट'** की संस्थापक कलाकार के रूप में उन्होंने अपनी कल्पना को ऐसी कलाकृतियों में रूपांतरित किया है जो समावेशी डिज़ाइन और न्यूरोडाइवर्स कलाकारों की आजीविका को बढ़ावा देती हैं। उनकी कलाकृतियाँ **एच एंड एम, बर्लिन (2024)** में एक माह लंबे वैश्विक प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुईं और उन्होंने **मलेशिया में एशिया पैसिफिक डाउन सिंड्रोम फेडरेशन सम्मेलन** में भारत का प्रतिनिधित्व किया। **शार्क टैंक इंडिया (2025)** और **इंडिया इंक्लूज़न समिट** में उनकी उपस्थिति ने हज़ारों लोगों को प्रेरित किया। कला, नवाचार और समावेशन में उनके असाधारण योगदान के सम्मान में कुमारी धृति प्रणय रांका **को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'श्रेष्ठ दिव्यांग बालिका' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति -दिव्यांगजनों के सशक्तीकरण के लिए कार्यरत”			
1		**श्री राजीव भट्ट**	दिल्ली के **श्री राजीव भट्ट** देश के प्रख्यात लर्निंग डिसएबिलिटी विशेषज्ञ और समावेशी शिक्षा के दूरदर्शी शिक्षाविद हैं। तीन दशकों से अधिक की सेवा के दौरान उन्होंने ऑटिज़्म, डिस्लेक्सिया, एडीएचडी तथा अन्य सीखने संबंधी चुनौतियों वाले दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। अध्ययन इंक्लूसिव लर्निंग सेंटर के संस्थापक निदेशक के रूप में उन्होंने योग, थेरेपी और व्यक्तिगत शिक्षा योजनाओं**) IEPs)** को जोड़कर एक समग्र एवं बालकेंद्रित शिक्षण पद्धति विकसित की है-, जो बच्चों के शैक्षणिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को सशक्त बनाती है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें डिकोडिंग ऑटिज़्म और डिकोडिंग डिस्लेक्सिया शिक्षकों और अभिभावकों के लिए अमूल्य मार्गदर्शक हैं। उनके मार्गदर्शन में कई विशेष आवश्यकता वाले बच्चों ने राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं । श्री भट्ट दिव्यांगजनों के समाज में समान रूप से समावेशन में सतत कार्यरत हैं । समावेशी शिक्षा, जागरूकता और दिव्यांग बच्चों के सशक्तिकरण में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री राजीव भट्ट को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार ‘दिव्यांगजन के सशक्तिकरण हेतु कार्यरत सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति ’श्रेणी में सम्मानित किया गया ।
2	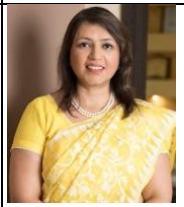	**सुश्री देवांगी पराग दलाल**	महाराष्ट्र के मुंबई की **सुश्री देवांगी पराग दलाल** प्रसिद्ध ऑडियोलॉजिस्ट, लेखिका और समाजसेविका हैं जिन्होंने तीन दशकों से अधिक समय से श्रवणबाधित बच्चों के सशक्तिकरण के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। जोश फाउंडेशन की संस्थापक और हियरिंग हार्ट्स की निदेशक के रूप में उन्होंने 2000 से अधिक बच्चों को निशुल्क डिजिटल श्रवण यंत्र:, थेरेपी और समावेशी शिक्षा की सुविधा प्रदान की है। वे **अमेरिकन एकेडमी ऑफ ऑडियोलॉजी** द्वारा प्रदत्त **ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड)2012)** प्राप्त करने वाली **प्रथम भारतीय** हैं। उनके अभियानों *‘द चेंज इज़ हियर’* और *‘कुछ सुना आपने’* ने देशभर में श्रवण स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाई है।उन्होंने विज्ञान, सेवा और संवेदना को जोड़ते हुए निःशब्द जीवनों में ध्वनि और आत्मविश्वास का संचार किया है। श्रवणबाधित बच्चों के सशक्तिकरण और समावेशन के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **सुश्री देवांगी पराग दलाल को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार ‘दिव्यांगजन के सशक्तिकरण हेतु कार्यरत’ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति’ श्रेणी में प्रदान किया गया ।**

दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्यरत सर्वश्रेष्ठ पुनर्वास पेशेवर/कार्मिक			
1		**डॉ. श्रुति मोरे भारद्वाज**	हिमाचल प्रदेश के कुल्लू की **डॉ. श्रुति मोरे भारद्वाज** एक उत्कृष्ट व्यावसायिक चिकित्सक (Occupational Therapist) और सामाजिक नवप्रवर्तक हैं, जिन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में पुनर्वास की दिशा को नया आयाम दिया है। **साम्फिया फाउंडेशन** की संस्थापक निदेशक के रूप में वे हिमाचल प्रदेश की **एकमात्र कार्यरत व्यावसायिक चिकित्सक** हैं जो दूरस्थ जनजातीय गाँवों में दिव्यांग बच्चों को जीवन बदलने वाली चिकित्सा सेवाएँ प्रदान कर रही हैं।उनकी अभिनव पहल **"थेरैपी ऑन व्हील्स"** के माध्यम से कुल्लू और चंबा में **450 से अधिक बच्चों** और **1600 परिवारों** को प्रारंभिक हस्तक्षेप और परामर्श सेवाएँ मिली हैं। उन्होंने **राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK)** के अंतर्गत कुल्लू में **जिला प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र (DEIC)** की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।विज्ञान, संवेदना और संस्कृति को जोड़ते हुए उन्होंने पुनर्वास को समाज के हर स्तर तक पहुँचाया है। उनके असाधारण योगदान के सम्मान में डॉ. श्रुति मोरे भारद्वाज **को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ पुनर्वास पेशेवर' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
दिव्यांगता के सशक्तिकरण के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान/नवप्रवर्तन/उत्पाद विकास			
1		**श्री प्रतीक माधव**	कर्नाटक के बेंगलुरु के **श्री प्रतीक माधव** एक दूरदर्शी नवप्रवर्तक और सामाजिक उद्यमी हैं जिन्होंने प्रौद्योगिकी के माध्यम से दिव्यांगता सशक्तिकरण को नई दिशा दी है। **असिस्टेक फाउंडेशन (ATF)** के सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में उन्होंने **भारत का पहला सहायक प्रौद्योगिकी नवाचार तंत्र** स्थापित किया है, जो अनुसंधान, उत्पाद विकास और समावेशन को बढ़ावा देता है। उनके नेतृत्व में ATF ने **500 से अधिक स्टार्टअप्स** को सशक्त किया, **120 सहायक उत्पादों** और **50 पेटेंट्स** का विकास किया तथा **10 लाख से अधिक लोगों के जीवन** को प्रभावित किया है। उनके उपक्रम **"अदिद्वार"**—भारत का पहला डिजिटल समावेशन प्लेटफ़ॉर्म—और **"इल्यूमिनएट"** जैसे कार्यक्रम नवाचार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।वे **नीति आयोग की राष्ट्रीय सहायक प्रौद्योगिकी रूपरेखा समिति** के सदस्य हैं और समावेशी नीति एवं उद्यमिता को दिशा दे रहे हैं। सहायक प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए **श्री प्रतीक माधव को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान/नवप्रवर्तन/उत्पाद विकास ' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

II. दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने मे कार्यरत संस्थानों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार- 2025

दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण में कार्यरत सर्वश्रेष्ठ संस्थान- (निजी संगठन, एनजीओ)		
1	**जय वकील फाउंडेशन एंड रिसर्च सेंटर**	**1944** में स्थापित **जय वकील फाउंडेशन एंड रिसर्च सेंटर**, मुंबई, देश की सबसे पुरानी और प्रमुख संस्था है जो **बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगता** से प्रभावित व्यक्तियों के सशक्तिकरण हेतु कार्यरत है। समावेशन की भावना से प्रेरित यह संस्था **शिक्षा, थेरेपी, स्वास्थ्य देखभाल और व्यावसायिक प्रशिक्षण** के माध्यम से **समग्र पुनर्वास सेवाएँ** प्रदान करती है, जिससे प्रतिवर्ष **750 से अधिक बच्चों और वयस्कों** को लाभ होता है। इसका अभिनव कार्यक्रम **"दिशा अभियान"** महाराष्ट्र के **18,000 से अधिक बच्चों** तक पहुँच चुका है। **राष्ट्रीय संसथान,एन.आई.ई.पी.आई.डी., सिकंदराबाद** के सहयोग से विकसित दिशा अभियान अब एक **राष्ट्रीय मॉडल** बन गया है, जो बहु-संवेदी शिक्षण और समावेशी पाठ्यक्रम को बढ़ावा देता है। संस्था की समग्र दृष्टि — चिकित्सा, शिक्षा, परिवार सहयोग और कौशल विकास — दिव्यांगजनों के जीवन को नई दिशा दे रही है। समावेशन और **समग्र पुनर्वास सेवाओं** के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए **जय वकील फाउंडेशन एंड रिसर्च सेंटर को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ संस्थान' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
2	**आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी**	**1983** में स्थापित **आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी (AWES)** देश की अग्रणी संस्था है जो अपने **140 आर्मी पब्लिक स्कूलों** और **32 आशा स्कूलों** के माध्यम से समावेशी शिक्षा को बढ़ावा दे रही है। **दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,** और **सीबीएसई दिशा-निर्देशों** के अनुरूप AWES ने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ा है। देशभर के स्कूलों में **1,690 से अधिक विशेष जरूरतों वाले बच्चे** अध्ययनरत हैं, जिनके मार्गदर्शन हेतु **135 विशेष शिक्षक** और **115 परामर्शदाता** कार्यरत हैं। **प्रोजेक्ट इंक्लूजन, दिशा अभियान,** तथा **ISLRTC, नई दिल्ली** और **NIEPVD, देहरादून** जैसी संस्थाओं के सहयोग से AWES ने **व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ (IEPs),** सुलभ अधोसंरचना और डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा दिया है।नीति, शिक्षण और व्यवहार के समन्वय से AWES ने समावेशी शिक्षा का एक राष्ट्रीय मॉडल स्थापित किया है। **समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ संस्थान' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

दिव्यांगजनों के लिए सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता (सरकारी संस्थान / सार्वजनिक उपक्रम / निकाय / निजी क्षेत्र.)

1	**विंध्य ई-इन्फोमीडिया प्राइवेट लिमिटेड**	**2006** में स्थापित **विंध्य ई-इन्फोमीडिया प्राइवेट लिमिटेड,** बेंगलुरु, एक अग्रणी सामाजिक उद्यम है जिसने व्यावसायिक उत्कृष्टता को समावेशन के साथ जोड़ा है। पिछले 19 वर्षों में संस्था ने **24 राज्यों में 7,000 से अधिक दिव्यांगजन (PWDs)** को रोजगार प्रदान किया है, जिनमें नौ प्रकार की दिव्यांगताएँ शामिल हैं। **बेंगलुरु, हैदराबाद, नवी मुंबई, कृष्णागिरी और नागपुर** स्थित इसके **पाँच समावेशी केंद्रों** में पूर्णतः सुलभ अधोसंरचना, अनुदानित भोजन एवं आवास, और सशक्तिकरण का माहौल उपलब्ध है। **'विन-अस्पायर लीडरशिप एकेडमी'**, **'विन-केयर'** और **'हैंड्स ऑफ इंक्लूजन'** जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिवर्ष **3,000 से अधिक दिव्याग युवाओं** को प्रशिक्षण दिया जाता है तथा **150 से अधिक दिव्यांग कर्मचारी** नेतृत्व भूमिकाओं में पदोन्नत होते हैं। दिव्यांगजनों के लिए **सतत और व्यापक रोजगार सृजन** में उत्कृष्ट योगदान के लिए **विंध्य ई-इन्फोमीडिया प्राइवेट लिमिटेड को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'दिव्यांगजनों के लिए सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

दिव्यांगजनों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्लेसमेंट एजेंसी (सरकारी / राज्य सरकार / स्थानीय निकाय के अतिरिक्त)

1	**सारथि सीआरएम प्राइवेट लिमिटेड** .	**2018** में स्थापित और **गुरुग्राम, हरियाणा** स्थित **सारथि सीआरएम प्राइवेट लिमिटेड** एक अग्रणी सामाजिक उद्यम है जो रोजगार, प्रौद्योगिकी और जागरूकता के माध्यम से पूरे भारत में दिव्यांग समावेशन को प्रोत्साहित कर रहा है। पिछले सात वर्षों में संस्था ने **500 से अधिक दिव्यांगजनों को प्रत्यक्ष रोजगार** प्रदान किया है तथा **3,000 से अधिक दिव्यांगजनों** को **15 राज्यों** में प्रशिक्षण, जॉब फेयर और वर्चुअल प्लेटफॉर्म के माध्यम से स्थायी रोजगार दिलाया है। संस्थान के **90% से अधिक कर्मचारी दिव्यांगजन** हैं, जो ग्राहक सेवा, भर्ती और बिक्री जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इसकी **इंक्लूज़न ट्रांसफॉर्मेशन प्लेटफ़ॉर्म (ITP)** ने **50 से अधिक संस्थाओं** को समावेशी भर्ती और कार्यस्थल नीतियाँ अपनाने में मदद की है, जबकि **10,000 से अधिक कॉर्पोरेट कर्मचारियों** को संवेदनशीलता प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। रोजगार में समावेशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए **सारथि सीआरएम प्राइवेट लिमिटेड को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'दिव्यांगजनों के लिए सर्वश्रेष्ठ प्लेसमेंट एजेंसी' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

सुगम्य भारत अभियान के कार्यान्वयन में बाधामुक्त वातावरण के सृजन में सर्वश्रेष्ठ राज्य / संघ राज्य क्षेत्र / जिला		
1	**जिला लुंगलेई, मिज़ोरम**	**लुंगलेई जिला प्रशासन**, मिज़ोरम ने पाँच दशकों की सेवा परंपरा के साथ सुगम्यता और समावेशन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। उपायुक्त के नेतृत्व में आरंभ किया गया **"प्रोजेक्ट लीप" (Lunglei's Empowerment for Access and Equity for All Persons)** दिव्यांगजनों के लिए **बाधामुक्त वातावरण और समावेशी तंत्र** विकसित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इस परियोजना के अंतर्गत **मिज़ोरम का पहला घर-घर दिव्यांग सर्वेक्षण** किया गया, जिसमें **1,400 से अधिक लाभार्थियों** की पहचान की गई। **1,091 दिव्यांगजन** स्वास्थ्य शिविरों से लाभान्वित हुए तथा **740 लाभार्थियों को ₹52 लाख मूल्य के सहायक उपकरण** एक ही दिन में वितरित किए गए। **एक्सेस ऑडिट, पर्पल फेयर** तथा **सुगम मतदान केंद्रों** जैसी पहलों ने इसे और सशक्त बनाया। **सुगम्य भारत अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन और बाधामुक्त वातावरण के सृजन** में उत्कृष्ट कार्य हेतु **लुंगलेई जिला, मिज़ोरम** को वर्ष 2025 का **राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ जिला'** श्रेणी में प्रदान किया गया।
सर्वश्रेष्ठ सुगम्य यातायात के साधन / सुचना एव संचार प्रोधोगिकी (सरकारी / निजी संगठन)		
1	**बैरीयरब्रेक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड**	**2004** में स्थापित **बैरीयरब्रेक सॉल्यूशंस प्रा. लि., मुंबई** भारत की अग्रणी डिजिटल एक्सेसिबिलिटी संस्था है जिसने प्रौद्योगिकी को समावेशन का माध्यम बनाया है। पिछले दो दशकों में संस्था ने **शिक्षा, शासन, स्वास्थ्य, रिटेल और वित्त** जैसे क्षेत्रों में **WCAG, ADA** और **Section 508** जैसे वैश्विक मानकों के अनुरूप हजारों वेबसाइटों और मोबाइल ऐप्स को दिव्यांगजनों के लिए सुलभ बनाया है। संस्था ने **A11yInspect** और **A11yNow** जैसे नवाचारों द्वारा एक्सेसिबिलिटी प्रबंधन को नई दिशा दी है तथा **राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक एक्सेसिबिलिटी नीति, GIGW दिशानिर्देश**, और **सुगम्यता मानकों** के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। **10,000 से अधिक पेशेवरों को प्रशिक्षित** कर और दिव्यांगजनों को रोजगार देकर यह संस्था समावेशन की जीवंत मिसाल बनी है। डिजिटल एक्सेसिबिलिटी और समावेशी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट नवाचार और नेतृत्व के लिए **बैरीयरब्रेक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सुगम्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी' श्रेणी में सम्मानित किया गया।**

दिव्यांगजनों के अधिकार अधिनियम / यूडीआईडी एवं दिव्यांग सशक्तिकरण की अन्य योजनाओं के कार्यान्वयन में सर्वश्रेष्ठ राज्य/ संघ राज्य क्षेत्र / जिला

1	**शिक्षा विभाग, शासन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र**	**राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का शिक्षा विभाग, समग्र शिक्षा अभियान** के अंतर्गत **दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016** के प्रभावी क्रियान्वयन का राष्ट्रीय मॉडल प्रस्तुत कर रहा है। दिल्ली सरकार के विद्यालयों में वर्तमान में **27,500 से अधिक दिव्यांग बच्चे** शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। **2,321 विशेष शिक्षकों,** जिनमें **98 दिव्यांग शिक्षक** शामिल हैं, द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी के लिए व्यक्तिगत शिक्षा योजना, संसाधन कक्ष एवं **14 जिला संसाधन केंद्रों** के माध्यम से थेरेपी एवं परामर्श सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं। सभी सरकारी विद्यालय **100% सुगम्य** हैं, जिनमें रैम्प और संशोधित शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। **फंक्शनल करिकुलम, 1,400 विद्यार्थियों हेतु होम-बेस्ड शिक्षा,** तथा **यूडीआईडी एकीकरण** जैसी पहलें दिल्ली की समावेशी और अधिकार-आधारित दृष्टि को दर्शाती हैं। **समावेशी शिक्षा, सुगम्यता और दिव्यांग कल्याण योजनाओं के उत्कृष्ट क्रियान्वयन** के लिए **राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के शिक्षा विभाग को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ राज्य' श्रेणी में प्रदान किया गया।**
2	**राजकोट जिला, गुजरात**	**राजकोट जिला प्रशासन ने दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016** के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से समावेशी प्रशासन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। उपायुक्त के नेतृत्व में पिछले दो वर्षों में **ए.एल.आई.एम.सी.ओ.** के सहयोग से **ब्लॉक स्तर पर आकलन एवं उपकरण वितरण शिविर** आयोजित किए गए, जिनसे **2,494 दिव्यांगजन** लाभान्वित हुए तथा **₹3.43 करोड़ मूल्य के 4,314 सहायक उपकरण** वितरित किए गए। जिले में **1,711 यू.डी.आई.डी. कार्ड, 1,151 निरामया स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियाँ**, तथा **135 अभिभावकता प्रमाणपत्र राष्ट्रीय ट्रस्ट अधिनियम, 1999** के अंतर्गत जारी किए गए। इसके साथ ही **960 विद्यालयों में सुलभ अधोसंरचना,** घर-आधारित शिक्षा एवं सुलभ मतदान जैसी पहलों ने इसे एक समावेशी जिला बना दिया है। दिव्यांग कल्याण योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं **सुगम और समावेशी वातावरण के निर्माण** हेतु **राजकोट जिला, गुजरात को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ जिला' श्रेणी में प्रदान किया गया।**

दिव्यांगजनों के अधिकार अधिनियम 2016 के कार्यान्वयन हेतु अपने राज्य में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु राज्य दिव्यांगजन आयुक्त।		
1	**दिव्यांगजन आयुक्त, ओडिशा**	**श्रीमति ब्रताती हरिचंदन** के नेतृत्व में **दिव्यांगजन आयुक्त, ओडिशा का कार्यालय दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016** के प्रभावी क्रियान्वयन और दिव्यांग सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक आदर्श के रूप में उभरा है। कार्यालय द्वारा **नयागढ़, क्योंझार और रायगढ़** जिलों में **जागरूकता कार्यशालाएँ** आयोजित की गईं जिनमें **400 से अधिक अधिकारी एवं अनेक एनजीओ** शामिल हुए। **29 शिकायत निवारण अधिकारियों** के लिए प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए तथा **जिला सामाजिक सुरक्षा अधिकारियों** के साथ नियमित समीक्षा बैठकें ली गईं। कार्यालय ने **प्रधानमंत्री आवास योजना** एवं **अंत्योदय गृह योजना** के अंतर्गत **19,577 आवास प्रकरणों** का समाधान किया तथा **उत्कल विश्वविद्यालय** और **एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज** जैसे प्रमुख संस्थानों का **सुगम्यता ऑडिट** कराया।सुगम्यता, शिकायत निवारण और जन जागरूकता में इसके निरंतर प्रयास सराहनीय हैं। **आर.पी.डब्ल्यू.डी. अधिनियम के सफल क्रियान्वयन एवं उत्कृष्ट नेतृत्व** के लिए **दिव्यांगजन आयुक्त, ओडिशा के कार्यालय को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।**
पुनर्वास पेशेवरों के विकास में संलग्न सर्वश्रेष्ठ संगठन		
1	**प्रमिला कटियार स्पेशल एजुकेशन इंस्टीट्यूट**	**2010** में **पुखरायन, कानपुर देहात (उत्तर प्रदेश)** में स्थापित **प्रमिला कटियार स्पेशल एजुकेशन इंस्टीट्यूट** ग्रामीण भारत में पुनर्वास पेशेवरों के प्रशिक्षण और दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण का प्रमुख केंद्र बन चुका है। **दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016** के अंतर्गत पंजीकृत एवं **रीहैबिलिटेशन काउंसिल ऑफ इंडिया (RCI)** से मान्यता प्राप्त यह संस्थान **श्रवण बाधित** तथा **बौद्धिक एवं विकासात्मक दिव्यांगता** विषयों में **डिप्लोमा इन स्पेशल एजुकेशन** कार्यक्रम संचालित कर अब तक **500 से अधिक विशेष शिक्षकों** को प्रशिक्षित कर चुका है। **दीनदयाल दिव्यांगजन पुनर्वास योजना** के अंतर्गत स्थापित **जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र (DDRC)** के माध्यम से संस्थान नि:शुल्क फिजियोथेरेपी, भाषण एवं श्रवण परीक्षण, व्यावसायिक प्रशिक्षण और **25 से अधिक ग्रामों** में जनजागरण शिविरों का संचालन करता है। **पुनर्वास पेशेवरों के विकास और समावेशी शिक्षा के प्रसार में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रमिला कटियार स्पेशल एजुकेशन इंस्टीट्यूट को वर्ष 2025 का राष्ट्रीय पुरस्कार 'पुनर्वास पेशेवर तैयार करने वाली सर्वश्रेष्ठ संगठन' श्रेणी में सम्मानित किया गया।**